भोजपुरी लोकगीतों में संस्कार गीत

डॉ0 रिचा वर्मा

साधारणतया बोलचाल की भाषा में हम लोक में गाए जाने वाले गीत को 'लोक गीत' कहते हैं। लोक शब्द संस्कृत में 'लोकृ दर्शने' धातु में धञ् प्रत्यय लगाने पर बनता है। इस धातु का अर्थ हुआ देखने वाला अर्थात् लोक शब्द का अर्थ हुआ देखने वाला। ऋग्वेद् में लोक के लिए जन शब्द का भी प्रयोग मिलता है। उपनिषदों में भी अनेक स्थानों में लोक शब्द व्यवहार में आता है।

लोकगीतों में हमें जन–जीवन से जुड़ी समस्त बातों का समावेश सुनने को मिलता है। ये लोकगीत जन मानस के हृदय के उद्गार होते हैं जो कि हमें गीतों के माध्यम से सुनने को मिलते हैं। लोकगीतों के माध्यम से हमें विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति, भाषा, रहन–सहन, भोजन, पहनावा इत्यादि की भी जानकारी मिलती है।